ISSN : 2348-4624
Vol. : IX, No. : XXXIII
January-March, 2022

I2OR Impact Factor : 7.015

Śodha Mīmāṁsā

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in chief
Dr. Rakesh Kumar Maurya

Associate Editor
Dr. Anish Kumar Verma & Dr. Devi Prabha

Published by :
Kusum Jankalyan Samiti
Deoria, U.P. (INDIA)

Scanned with OKEN Scanner

Sodha Mimāṁsā
An International Peer-reviewed Refereed Research Journal
Vol. IX, No. XXXIII, January-March, 2022

विषयानुक्रमणिका

भारतीय समाज में दलित महिलाएँ : दशा और दृष्टि 1–2
डॉ० मनोज कुमार साह
भारत में रोजगार सृजन की समस्या और चुनौतियाँ 3–5
उपेन्द्र प्रसाद सिंह व रूपेश कुमार
वैदिक साहित्य मे कृषि एवं पर्यावरणीय वर्णन 6–8
सुबोधकांत मिश्र
पर्यावरणीय नीतिशास्त्र की आवश्यकता एवं महत्व: वर्तमान सन्दर्भ में एक अध्ययन 9–10
आकाश कुमार
पं० अम्बिकादत्त व्यास एवं महाकवि बाणभट्ट की तुलनात्मक समीक्षा 11–13
डॉ० नकुल पाण्डेय
आधुनिक संस्कृत साहित्य में यायावर वर्ग 14–16
शैलेन्द्र विक्रम व प्रो० शुकदेव भोई
गणेश शंकर 'विद्यार्थी' : पत्रकारिता के कालजयी हस्ताक्षर 17–19
सुभाषचन्द्र गुप्त
स्मृतियों में नारी स्वतन्त्र्य की सीमाएँ 20–22
डॉ० रोली सिंह
भारत में बौद्धिक सम्पदा हेतु व्यावसायिक पाठ्यक्रम 23–25
दरबार सिंह व डॉ० मनीषा सिंह
समाज पर बाबा साहब अम्बेडकर के विचारों के प्रभाव का अध्ययन 26–28
डॉ० शिवचन्द सिंह रावत
जनसंख्या एवं मानव संसाधन : एक अध्ययन 29–30
कौशलेंद्र प्रताप सिंह व डॉ० अलकेश्वरी सिंह
आचार्य प्रवर श्री सांवरमल शास्त्री के उपन्यास सुयोषित् में नारी चिंतन 31–33
मेधा शर्मा
बौद्ध धर्म में वर्णित पारमिताएँ 34–36
डॉ० राज किरण
ऋग्वेद में श्रेय एवं प्रेय की अवधारणा 37–39
डॉ० पवन कुमार गुप्त
भारतीय समाज में इस्लाम की परम्परा और संस्कृति 40–41
डॉ० मो० शहनवाज़
ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा एवं रचना शैली 42–43
शिखा पाण्डेय
भारतीय ग्रंथों में पतिव्रता सीता : एक समीक्षात्मक अध्ययन 44–45
डॉ० कमलेश कुमार थापक व आशीष पाठक
राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन 46–48
प्रो० नीलाभ तिवारी व राकेश कुमार वर्मा
इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास एवं हाशियाकृत तृतीयलिंगी समाज 49–51
अनुराधा सिंह
भर्तृहरिविरचिते वाक्यपदीये संज्ञानात्मकसिद्धान्तः 52–54
पवनकुमारद्विवेदी

Scanned with OKEN Scanner

odha Mimāmsā • ISSN 2348-4624
Letter No. NSL/ISSN/INF/2014/461
ublished by : Kusum Jankalyan Samiti, Deoria, U.P. (INDIA)

I2OR Impact Factor : 7.015
Year : IX, No. XXXIII
January-March, 2022
Page No. : 17-19

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' : पत्रकारिता के कालजयी हस्ताक्षर

सुभाषचन्द्र गुप्त*

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखण्ड

सारांश : स्वाधीनतापूर्व की हिन्दी–पत्रकारिता में एक ऐतिहासिक और कालजयी नाम है – गणेशशंकर 'विद्यार्थी'। दरअसल नव–जागरण और स्वाधीनता–आन्दोलन के समय हिन्दी–पत्रकारिता का विवेक बहुत जाग्रत था। तत्कालीन बुद्धिजीवियों–पत्रकारों ने महसूस कर लिया था कि सांप्रदायिकता के राक्षस से लड़े बिना न तो देश की एकता संभव है और न प्रकारान्तर से देश की आजादी। तिलक, गांधी, सुभाष, मौलाना आजाद आदि उन्नायकों के इस चिंतन–कर्म को बहुत पहले ही हिन्दी के प्रथम समाचार–पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' (1826) ने वाणी दे दी थी। उसका आदर्श वाक्य था "हिन्दुस्तानियों के हित हेतु"। ध्यान रहें कि वह केवल हिन्दुओं के हित के हेतु नहीं था। इसी तरह हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु का 'बलिया–भाषण' (1984) प्रसिद्ध है जब उन्होंने उद्घोष किया–"बंगाली, मराठी, पंजाबी, मद्रासी, वैदिक, जैन, ब्रह्म–समाज और मुसलमान सब एक का हाथि एक पकड़ों।"[1] भारतेन्दु की अपनी पत्रिका 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में जो सामग्री छपती थीं उसमें उनकी धर्मनिरपेक्षता को देखा जा सकता है। इसी काल के एक अन्य मनीषी बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' "आनन्द कांदबिनी" नामक पत्रिका निकालते थे। एक जगह वे लिखते हैं–"हम दोनों एक ही मातृभूमि के पुत्र हैं... राजनीतिक मुआमलों में क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सब एक ही नाव पर सवार हैं। हमारे नेताओं ने हमारी आँखों पर ऐसी पट्टी बांध दी है कि इतनी–सी बात भी हम नहीं समझ सकते।"[2]

मुख्य शब्द : समाचार–पत्र, नव–जागरण, स्वाधीनता आन्दोलन, हिन्दी–पत्रकारिता, राजनीतिक आदि।

इसी युग के एक अन्य बड़े समाज–सुधारक सर सैयद अहमद खां अपने आरंभिक वर्षा में इसी धार्मिक एकता के प्रयासों में संलग्न दिखाई पड़ते हैं। वे कहते है–"राष्ट्र शब्द में मैं हिन्दू–मुसलमान दोनों को शामिल करता हूँ। मैं केवल मात्र यही अर्थ समझता हूँ। मेरे लिए इस बात का कोई मूल्य नहीं है कि उनके धार्मिक विश्वास क्या है? हमें जो कुछ देखना है, वह यह है कि हम सब एक जमीन पर बसते हैं, एक ही प्रकार के शासकों के अधीन हैं, हमारे सबके हित का मूल स्रोत एक ही हैं।"[3]

गणेशशंकर विद्यार्थी इस श्रृखंला में एक महत्वपूर्ण नाम है, जिन्होंने अपने पत्र 'प्रताप' के माध्यम से एक बड़ा आदर्श प्रस्तुत किया। 9 नवम्बर, 1913 को कानपुर से 'प्रताप' का प्रथम अंक निकला। पहले ही अंक में प्रताप की नीति की घोषणा करते हुए विद्यार्थी जी ने लिखा–"हम अपनी प्राचीन सभ्यता और जातीय गौरव की प्रशंसा करने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे और अपने पूज्यनीय पुरूषों के साहित्य, दर्शन, विज्ञान और धर्मभाव का यश सदैव गाएँगें। किन्तु! अपनी जातीय निर्बलताओं और सामाजिक कुसंस्कारों तथा दोषों को प्रकट करने में हम कभी बनावटी जोश या मसलहते वक्त से काम न लेगें क्योंकि हमारा विश्वास है कि मिथ्या अभियान जातियों के विनाश का कारण होता है।"[4] इस वक्तव्य का महत्व इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए कि सांप्रदायिक शक्तियाँ अपनी प्राचीन परंपरा और विरासत को विवेकपरक और तार्किक दृष्टि से न देखकर निर्बलताओं को छिपाते हुए कुसंस्कारों और रूढ़ियों आदि को ही विरासत मानकर महिमा–मंडित करती रहती है और इस प्रकार सांप्रदायिक चेतना को मजबूत करती है। गणेशशंकर विद्यार्थी की दृष्टि इस संदर्भ में कितनी सजग थी यह 'प्रताप' की नीति से स्पष्ट हो जाता है। दरअसल उस समय सांप्रदायिकता का जहर हमारे समाज में फैलना शुरू हो गया था और इसमें राजनीतिज्ञों के अतिरिक्त कुछ समाचार–पत्र भी लिप्त थे। बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'विशाल भारत' में अपने संपादकीय टिप्पणी में लिखा हैं–"सांप्रदायिकता के भाव ने हमारे सार्वजनिक जीवन के क्षेत्रों में जहर मिला दिया है, और यह जहर पत्र–संपादन के क्षेत्र में भी फैल गया है। कुछ लोगों का ख्याल है कि हमें हिन्दुस्तान में जो सांप्रदायिकता, अविश्वास और झगड़े दिखायी पड़ते हैं, उनका मूल कारण सांप्रदायिक समाचार पत्र हैं और दूसरे लोग इससे उल्टी बात करते हैं। उनका कथन है कि ये समाचार पत्र तो उस सांप्रदायिकता का प्रतिबिम्ब मात्र हैं, जो देश में चारों तरफ फैली हुई है"।[5] विद्यार्थी जी और उनकी तरह के अन्य पत्रकारों के संघर्ष को इसी परिप्रेक्ष्य में देखना होगा। उस जमाने में भी सांप्रदायिकता का राक्षस सिर उठाने लगा था। लेकिन नवजागरण और स्वाधीनता आन्दोलन ने भारतीय मानस को विवेकशील और मानवतावादी बनाये रखा था तथा धार्मिकता को एक 'रैशनलाइजेशन' की ओर ले जाने का प्रयास जारी था। शंभूनाथ लिखते हैं–'जिस धर्मनिरपेक्षता की नींव नवजागरण ने रखी थी, वह पश्चिमी अवधारणा और भारतीय परिस्थितियों के बीच अन्तःक्रिया का परिणाम थी। वह न केवल 'सर्व–धर्म–समभाव' थी, और न केवल 'सुधारवाद'। तब धर्मनिरपेक्षता का मतलब केवल इतने तक सीमित नहीं था कि धर्म राजनीति में मिश्रित न हो एवं सभी धार्मिक समूह आजादी के साथ अपना–अपना धर्म माने।... धार्मिक सहिष्णुता का पहलु प्रधान जरूर था। पर धर्मनिरपेक्षता का यह एक मतलब यह भी था– अपने–अपने धर्म की रूढ़ियों से लड़ते हुए एक लौकिक और विवेकवादी अर्न्तदृष्टि का विकास।"[6] कहना न होगा कि प्रताप के पहले अंक की नीतिगत घोषणा से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक विद्यार्थी जी इसी संघर्ष में लगे रहे। अपने विभिन्न लेखों, पत्रों, भाषणों के साथ–साथ जीवन–कर्म में भी विद्यार्थी जी बराबर सक्रिय रहें। राष्ट्रीयता, धर्म, शिक्षा, भाषा, हिन्दू–मुस्लिम एकता आदि विभिन्न विषयों पर विद्यार्थी जी के विचार इस बात का प्रमाण हैं।

Scanned with OKEN Scanner